भट्टारक सोमसेन

जीवन-परिचय : भट्टारक सोमसेन भट्टारक गुणभद्र के शिष्य थे। भट्टारक सोमसेन के उपदेश से कई स्थानों पर मूर्तियाँ प्रतिष्ठित की गयी थी। सोमसेन अपने समय के प्रभावशाली वक्ता, धर्मोपदेशक और संस्कृति अनुरागी व्यक्ति थे।

सोमसेन का समय विक्रम संवत् की 17वीं शती है।

रचना-परिचय : सोमसेन के द्वारा लिखित निम्नलिखित रचनाएँ हैं—

1. रामपुराण : रामपुराण में रामकथा वर्णित है। इस कथा का आधार आचार्य रविषेण का पद्मचरित है। कथावस्तु 33 अधिकारों में विभक्त है। ग्रन्थ की भाषा और शैली सरल है।

2. शब्दरत्नप्रदीप : शब्दरत्नप्रदीप संस्कृत भाषा का कोश है। इसमें कवि ने शब्दों के अर्थ तो दिये ही हैं, साथ ही उनके प्रकृति, प्रत्यय और लिंगादि भी बताए हैं।

3. धर्मरसिक त्रिवर्णाचार : धर्मरसिक-त्रिवर्णाचार में धर्म, अर्थ और काम-इन तीनों विषयों का वर्णन किया गया है। ।